भक्त हृदय के उद्गार..

राम इतनी कृपा करो, शिव रूप धरी आन्तर बसो।
प्रज्ञा गंगा बह जाये, तब ही तो मुझको अनुभव हो।।

शिव जब जब जग में बसें, राम का रूप वह धरें।
जग वाले न जान सकें, प्रमाण देख वह क्या कहें।।

जितना वह झुकें उतना कुचलें, उनको नहीं वे जान सकें।
पाप सगरे उनपे मढ़ें, और पुण्य आपुनो समझा करें।।

राग द्वेष में पड़े हुए, विषकर भुजंग वह बन जायें।
दूजे सारे पाप करें, वह छिपे रहें और मुस्काएं।।

सबके दुःख वह हरते हैं, अपने न कबहुँ बताते हैं।
लोग उन्हें ठुकरायें लाख, ठुकरा वह नहीं पाते हैं।।

उनकी बात कोई क्या समझे, वा जीवन आप प्रमाण हो।
वह विष पीयें और अमृत दें, इसी का नाम ही राम हो।।

१३.११.१९७१

अर्पणा प्रकाशन 'गंगा श्रद्धा प्राणप्रद'

अनुक्रमणिका

१. *भक्त हृदय के उद्‌गार..*

३. *होली के रंग श्याम के संग*
संकलन - पूज्य छोटे माँ

८. *मन्दिर में प्रथम नमन*
प्रस्तुति - विष्णु प्रिया महता

१२. *चित्रपट में चित्र ज्यों, आरम्भ हुआ नहीं बदल सके..*
'मुण्डकोपनिषद्', द्वितीय मुण्डक १/३

१७. *आपका आश्वासन, 'जो मैं दे देता हूँ, उसे वापिस नहीं लेता!'*
श्रीमती पम्मी महता

२०. *स्वरूप तथा ऋषि-स्थिति*
परम पूज्य माँ से 'पिताजी' के प्रश्नोत्तर

२५. *तू तन नहीं, तू आत्मा है.. इसी में स्थित होने के यत्न कर!*
अर्पणा प्रकाशन 'श्रीमद्‌भगवद्‌गीता - भगवद् बाँसुरी में जीवन धुन' में से..
श्रीमद्‌भगवद्‌गीता २/२२-२३

२८. *आत्मा फटे पुराने वस्त्रों को त्याग कर.. नए वस्त्र ग्रहण करता है!*
- परिजनों को अर्पित श्रद्धासुमन

अतीव प्रिय मेरे साथी.. इन्दु दयाल
धैर्य के प्रतीक.. एशी आंटी!
श्रद्धांजलि - आभा भण्डारी

३७. *अर्पणा समाचार पत्र*

❖ ❖ ❖

सम्पादक की ओर से

गद्य में प्रस्तुत सभी लेख साधकों के प्रश्नों के उत्तर में परम पूज्य माँ द्वारा प्राप्त सत्संगों पर आधारित हैं और संकलन-कर्ता की निजी समझ के अनुकूल हैं। काव्य की पंक्तियाँ पूज्य माँ के मुखारविंद से प्रवाहित दिव्य प्रवाह का अंश हैं; जिसे सुश्री छोटे माँ ने लेखनी बद्ध किया है। अपनी पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार उसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुति में किसी भूल के लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

सम्पादक : *पूनम मलिक*
सह सम्पादक : *श्रीमती साधना पाल*

पता : अर्पणा आश्रम, मधुबन, करनाल १३२ ०३७, हरियाणा, भारत

श्री हरीश्वर दयाल, अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन, करनाल १३२ ०३७ ०१, हरियाणा द्वारा मार्च २०२१ को प्रकाशित तथा सोना प्रिन्टर प्राईवेट लिमिटेड, एफ -८६/१, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज़-I, नई दिल्ली ११० ०२० द्वारा मुद्रित

होली के रंग श्याम के संग

संकलन - पूज्य छोटे माँ

परम पूज्य माँ को तिलक लगाते हुए पूज्य छोटे माँ

प्रश्न : पूज्य माँ! आज होली है। वृन्दावन की होली के विषय में बहुत चर्चा सुनी है.. वहाँ किस भाव से होली खेलते हैं कृपया इसके विषय में हमें बताईये!

पूज्य माँ : होली जीवन की कथा का प्रतीक है। जीवन में रंग तो पड़ेंगे.. ज़रूर पड़ेंगे.. किन्तु रंगो से घबराओ मत! हर जीव जो आपको सामने मिलेगा, उसका कोई न कोई रंग तो होगा ही.. इस रंग से 'मैं' के रहते हुए कोई न कोई प्रहार तो होगा ही और संग, मोह के रहते हुए कोई न कोई गड़बड़ तो होगी ही। अपने अपने किस्म का संग, मोह, अहंकार और कामनायें तथा चाहनायें, लग्न, सब में होंगे ही.. परन्तु उनके ढंग भिन्न होंगे।

दो मन एक समान नहीं होते। उनकी चाहना एक हो सकती है परन्तु ढंग समान नहीं होते। इसी सत्य को जीवन में समझने के लिये भगवान की यह सौंदर्यपूर्ण लीला है। यह श्री कृष्ण की लीलाओं का महत्वपूर्ण अंग है। वृन्दावन में झूम झूम के लोग, गली गली में पिचकारी लेकर एक दूसरे पर रंग फेंकते हैं.. और जिस पर रंग न पड़े वह कहता है कि मेरे पर रंग नहीं पड़ा.. यह क्या हुआ?

अब यह बात किस भाव से कहते हैं, इसे जानें। वह लोग कहते हैं कि हे भाई! हमें इतने विभिन्न ढंगों से छेड़ दो। कई बार विपरीतता से अथवा कई बार ख़ुशी से ऐसा भर दो हमें, कि सारी दुर्वृतियाँ.. दूसरे को तबाह करने वाले भाव दूर हो जाएं।

मेरा बाक़ी वर्ष होलिका अथवा हिरण्यकश्यप की भाँति न बीते, बल्कि प्रह्लाद की भाँति बीते.. जो हर रंग में मुदित रहे, हर रंग से अप्रभावित रहे और जिन्होंने कभी ग़लती नहीं करी।

प्रह्लाद इतने छोटे हैं, परन्तु इतने बड़े हैं कि उनकी पूजा होती है। वह छोटे से बालक थे, उन पर लाखों प्रहार हुए, परन्तु वह सबसे अप्रभावित रहे। वह इतने सुन्दर शिशु हैं। हम उनकी भाँति ही बनें।

अब इसे समझें कि वृन्दावन में कृष्ण होली मनाते हैं, कृष्ण ही रंग फेंकते हैं। सभी जीव ढंग बेढंग से अपने अपने गुमान के वस्त्र पहने, आवरण चढ़ाये और ऐसे ऐसे रंग चढ़ाये बैठे हैं.. कोई अमीरी का, कोई ग़रीबी का, कोई वस्तु तथा विषय का, कोई भक्ति का और कोई ज्ञान का, सब कोई अपने अपने प्रेम का रंग लिये उनके पास आते हैं।

श्री कृष्ण उनके साथ होली खेलते हैं, जो उनसे प्रेम करते हैं। श्री कृष्ण के इस खेल में अमर तत्व निहित है। उस खेल में तो ऐसे प्रेम की बात है कि वहाँ क्रोध, लोभ, मोह और कामना का रंग चढ़ ही नहीं पाता। वास्तव में यह काम, क्रोध, मोह और लोभ की वृत्तियाँ तो बचपन से ही आरम्भ हो जाती हैं और बढ़ते बढ़ते वह अत्याचारी बन जाती हैं। इनका कैसे दमन किया जाये.. इन पर कैसे काबू पाया जाये.. यह तो केवल कृष्ण ही जानते हैं।

वह गोपिका गण के साथ होली खेलते हैं। वहाँ पर पुरुष तो एक ही है और वह हैं श्री कृष्ण! शास्त्र कहते हैं कि जो कुछ है वह सब प्रकृति जनित है, पुरुष तो एक ही हैं.. श्री कृष्ण! पुरुष तो आपका अपना आत्मा है; वह हर इनसान के आन्तर में है। इस शरीर रूपा ओढ़नी को देख कर पुरुष अथवा नारी नहीं बन जाते। हमें तो उस तत्व तक पहुँचना है।

साधक इतना ही माँगता है कि अब तो ऐसा रंग चढ़े कि सब रंग इसी में समा जायें। लाख रंग चढ़ाये जायें, लाख प्रेम भरे रंग हों, लाख गुमान भरे रंग हों, चाहे कोई भी रंग चढ़ाया जाये, परन्तु आप पर कोई रंग न चढ़े। कोई भी मनोकृति कैसा भी प्रहार लेकर आये, परन्तु वह आपको स्पर्श न कर सके।

होली में यह तत्व निहित है कि रंग हमें छू नहीं सकते। यदि हम कहें कि हम भगवान कृष्ण के वंश के हैं, श्री राम के वंश के हैं, हम नानक के वंश के हैं, मुहम्मद के वंश के हैं, आप अपने को जिस भी वंश के कहते हो, उस वंश की लाज रखो। उनकी लाज

तो उनका हुक्म मानने में है। इसके अतिरिक्त कोई भी रंग वहाँ नहीं चढ़ सकता। चाहे काला रंग हो अथवा लाल रंग हो।

जीव को चाहिये कि आज के दिन परम का नाम लेकर, कम से कम यह माँगे, 'हे भगवान! मेरी वृत्तियाँ, जो मेरे आन्तर में चली गई हैं, जो मेरे सोचे समझे बिना ही भड़क उठती हैं.. हे भगवान! इनको तो बीन लो, इनको तो ऐसे छीन लो कि यह कभी न उठें। कोई कैसा करे, कोई क्यों करे, सब कुछ देख कर भी मेरे आन्तर में भड़कन न उठे! मेरे मन में प्रतिकार झंकार न हो। ऐसी तड़प न उठे, जो मेरे आन्तर का समत्व डोल जाये।'

आज तो हम वृन्दावन में श्री कृष्ण के पास जाकर कहें, 'हे कृष्ण! आपने सब पर पिचकारी छोड़ी होगी। उनके तो अनेकों रंग शान्त हो गये होंगे! आपका स्पर्शन् करते ही ऐसे दिव्य प्रेम को पाकर उनकी कालिमापूर्ण वृत्तियाँ शान्त हो गईं।'

'हे कृष्ण! आज तो होली है, आज हम मुदित हैं और उदास भी। उल्लास भी लगता है परन्तु ऐसा भी प्रतीत होता है कि कुछ निराश हैं। इतना जीवन बीत गया, परन्तु अभी भी हमारे प्रहार नहीं गये, अभी भी हमारे विकार नहीं गये। इतना जीवन बीत गया, अभी भी दुःख सुख का अभाव नहीं हुआ। अभी भी 'मैं', 'मेरा', संग, लग्न और मोह नहीं

गया। यह त्योहार तो मैंने बहुत बार मनाया। परन्तु अब आपके साथ मनाना चाहती हूँ। आप अपना थोड़ा सा रंग हमारे पर डाल दीजिये।'

आज भगवान से ही प्रार्थना करो, 'हे भगवान! आप मुझ पर इतने रंग फेंकें कि इसके बाद वह रंग आपके फेंके हुए जान कर मैं कभी भी अपने मन में रोष न करूँ। मैं कभी किसी को मिटा कर, उस पर अपना आसन बनाने के लिये ऐसी बात न करूँ.. कभी भी किसी की हानि न करूँ!'

यह जो विकार मन में उठते हैं, यह तो दूसरे को ख़राब करने वाले होते हैं। वह तो यदि सामने प्रह्लाद भी हो, उसे भी जला देना चाहते हैं। वास्तव में क्रोध की अग्न क्रोधी को कहीं ज़्यादा जलाती है। जिस पर क्रोध किया हो, वह मुसकुरा भी सकता है और तड़प भी सकता है, किन्तु क्रोधी तो पल पल पर अपनी बुद्धि, अपनी इंसानियत को जलाता है। क्रोध ही साधु को जलाना चाहता है। हर जीव के आंतर में अहंकार की अग्नि है जो सदैव जलती ही रहती है। वह हर पल दूसरे को भस्म करके स्वयं विजयी होना चाहती है।

अहंकार चाहता है कि सभी मेरे इस शरीर रूपा बुत की परिक्रमा करें। हर इनसान अपनी पूजा कराना चाहता है। इनसान कहता है जो मेरे शरीर की ओर ग़लत आँख से देखेगा, मैं उसको मिटा दूँगा; जो मेरी चाहना में थोड़ा सा भी विघ्न बन कर आयेगा, मैं उसको मिटा दूँगा; जो भी कोई ऐसी बात करेगा जो मुझको पसंद नहीं, मैं उसको मिटा दूँगा। यह तो इस 'मैं' का स्वभाव ही है कि वह अपने आपको स्थापित करना चाहती है।

अब बताओ, नन्दलाल से, गोपाल से होली खेलनी है? क्या अपने आन्तर में जो होलिका का अंश है, जो प्रतिकार-झंकार का पुंज है.. जो हमें अंधा कर रहा है.. क्या उसको भस्म करना है? क्या हर रंग से प्रभावित होकर हम अपने आप को दुःखी कर लेंगे? सम्पूर्ण वृत्तियों का नाश करने के लिये.. चित्त वृत्ति निरोध करने के लिये और पूर्ण रंग होते हुए भी रंग रहित होने के लिये..

पूर्ण रंग आप पर होते हुए भी आप पर रंग न चढ़े, सबके साथ खेलो! जीवन में भी सबको हँसी दो, मुस्कराहट दो, प्रेम दो, मैत्री दो, होली का तो यही संदेश है।

भगवान श्री कृष्ण गोपियों के संग होली खेलते हैं। याद रहे होली तो वृत्तियों को मौन करने के लिये होती है, आवरण हटाने के लिये होती है। वहाँ पर बड़ा यह न समझे कि वह बड़ा है और छोटा यह न समझे कि वह छोटा है। सब प्रेम के साथ एक ही हो जायें, क्योंकि आज तो होली है और हमने किसी भी रंग से प्रभावित नहीं होना!

आज हमारी परीक्षा है। जो खेलना न चाहें उनके साथ कृष्ण ने भी होली नहीं खेली.. क्योंकि किसी के मन को कष्ट देने के लिये और किसी के मन में विरोध उत्पन्न करने के लिये आप कुछ नहीं कर सकते। आप तो होली खेलते हैं जहाँ सजातीय होते हैं, जहाँ सभी एक से मतवाले होते हैं, जहाँ पर सभी एक ही चीज़ को चाहते हैं और पुकार कर कहते हैं कि 'हे नन्दलाला! ओ गोपाला! अब तो हर ले यह मन मेरा!'

माखन इस मन को कहते हैं। जो इस मन को उड़ा ले, वह माखन चोर हैं, श्री कृष्ण! हे माखन चोर, इस मन को हर लो, 'अपने ही चित्त से जो अचेत मन से प्रहार कर देता है और इतने कर्म करवा देता है, मैं उससे तंग आ गया हूँ..'

'हे भगवान! आज के दिन कुछ तो करो। ऐसा रंग देना जो मुझपे चढ़ जाये। ज़िन्दगी में ऐसा प्रहार कभी न करूँ, जिससे किसी का रंग पक्का हो जाये, और वह उसी रंग में बँधा रहे उम्र भर!'

यदि उसी के रंग में रंग कर, उसी में बँध गया तो रंगने वाला भी पापी हो जायेगा; क्योंकि एक ने अपनी श्रेष्ठता के लिये, अपने को उच्चतम बतलाने के लिये रंग लिया, ऐसे ने जब शब्द बोला वह किसी रंग का था, जिसको कहा गया या जिस पर वह चढ़ा, वहाँ पर पक्का रंग बन गया, तब तो बात ग़लत हो गई। यह होली का नियम नहीं!

आपको चाहिये कि हर रंग के साथ खेलो ताकि आपके ऊपर कोई रंग चढ़े ही नहीं। हर रंग में मदमस्त होकर उसे इस प्रकार से उड़ाओ की हर रंग धूल की भाँति उड़ जाये, परन्तु ऐसा साबुन बन जाये कि आपके आन्तर में जो प्रतिकार-झंकार रूपा कालिमा है, उसके रंगो को उतार दे।

यह रंग इसलिये फेंके जाते हैं क्योंकि यह रंग अपने और दूसरे के रंग भी उतार देते हैं। होली इसलिये खेली जाती है कि खेल खेल में साबुन बन कर, बहुत रंग उतर भी गये। खेल खेल में खिलाड़ी भी बन गये और खेल खेल में पुजारी भी बन गये। खेल खेल में आपके विकार भी जा रहे हैं और ऐसा मिलन हो रहा है जहाँ पर ख़ुद की याद न रहे और ख़ुदी को याद करे। किन्तु यह नियम याद रखो कि वहाँ नहीं, जहाँ दूसरा नहीं चाहता।

यह सबको खेलना होता है, इसमें कोई संशय नहीं। किसी को यह नहीं कहना चाहिये कि हम नहीं खेलते, इसमें भी कोई शक नहीं, किन्तु जो न खेलना चाहे, उसको भी व्यर्थ में खराब करना, इसका भी किसी को अधिकार नहीं।

होली के त्योहार का तत्व रूप समझ कर, रंगों के इस त्योहार को मनायें!❖

मन्दिर में प्रथम नमन

प्रस्तुति - विष्णु प्रिया महता

राधा जी और श्री कृष्ण के विग्रह..
जिनमें पूज्य माँ को साक्षात् भगवान राम के दर्शन हुये

यह घटना ९ मार्च १९५८ की है। उन दिनों पूज्य माँ का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था.. जिसका कारण इनके द्वारा एक रोगी लड़की की अहर्निश निष्काम सेवा थी। उसकी सेवा में यह अपना खान-पान, विश्राम सब भूले रहते थे। थकान के कारण इनका शरीर भी अस्वस्थ रहने लगा। इनकी माता जी तथा इनकी बड़ी बहन कुछ दिन इनके पास रहने के लिए आये व इनकी ऐसी अवस्था देखकर बहुत चिन्तित हुए। उन्होंने डॉ. महता (जो उस समय जालन्धर के प्रख्यात चिकित्सक होने के साथ साथ इनके परिवार के मित्र भी थे), से आग्रह किया कि वह इनके स्वास्थ्य का ध्यान रखें। उन्हें सब पापा जी कह कर सम्बोधित किया करते थे।

पूज्य माँ के घर पहुँचने पर, डॉ. महता उस रोगी कन्या के प्रति पूज्य माँ की पूर्ण निष्कामता को देख कर आश्चर्यचकित रह गये। भगवत् नाम एवं शास्त्र अध्ययन,

विशेषकर गीता अध्ययन डॉ. साहब के जीवन में बहुत महत्व रखते थे। वह नियमित रूप से अपने मन्दिर में शास्त्र पठन एवं ध्यान आदि का अभ्यास किया करते थे। जब पूज्य माँ की माता जी व बड़ी बहिन जी ने डॉ. महता से इनके स्वास्थ्य का ध्यान रखने के लिए कहा तो वह पूज्य माँ की मदद करने के लिए सहर्ष तत्पर हो गये।

परम पूज्य माँ युवावस्था में

एक दिन उन्होंने प्रातः ही इनको स्वास्थ्य परीक्षण के लिए अपने घर पर बुला भेजा। वास्तव में वह पापा जी का पूजा का समय हुआ करता था। वह चाहते थे कि पूज्य माँ मन्दिर में उनकी बातें सुनें और निष्काम कर्म करने के साथ साथ उनको शास्त्र ज्ञान का भी परिचय मिले।

जब माँ पापा जी के घर पहुँचे तो वहाँ पर इनका परीक्षण करने के स्थान पर डॉ. महता की पत्नी श्रीमती सत्या महता (बीजी) इनको घर में ही स्थित मन्दिर में ले गये। जहाँ पापा जी अपनी रोज़ की पूजा के लिए बैठे थे।

वास्तव में पूज्य माँ का यह भगवान से प्रथम साक्षात्कार था। इससे पहले जब कभी भी मन्दिर जाने की बात हुआ करती तो कोई न कोई विघ्न ही इनकी राह में आ जाता।

पापा जी के मन्दिर में भगवान श्री कृष्ण एवं राधा जी के विग्रह थे, परन्तु जब पूज्य माँ ने वहाँ सीस झुकाया तो उनको वहाँ साक्षात् भगवान राम के दर्शन हुए। उन्होंने इससे पहले न तो रामायण का ही पठन किया था और न ही भगवान राम की अधिक चर्चा भी सुनी हुई थी। भगवान के मन्दिर में क़दम रखते ही जैसे पूज्य माँ के जन्म-जन्मान्तर के संस्कार उभर आये और तब से भगवान राम ही इनके आराध्य, इष्ट और जीवनाधार बन गये। एक बार मन्दिर में सीस जो झुका तो पुनः नहीं उठा और माँ सदा के लिए राम जी के ही हो गये।

शनैः शनैः मन्दिर में स्थित राम जी इनके अपने हृदय मन्दिर में आ विराजे और आन्तर-बाह्य सर्वत्र उनके ही दर्शन होने लगे। परम पूज्य माँ की ही वाणी द्वारा प्रवाहित इस बहाव में हमें इस घटना और पूज्य माँ की साधना प्रक्रिया की एक झलक मिलती है।

इसलिये पूज्य माँ ने यहाँ कहा 'राम ने छल किया' और 'धोखे से बुला लिया'..

..इक दिन राम ने देख सखी, मुझसे ऐसा छल किया।
सोच सोच वह हार गये, यह मूर्ख मन तो भूल गया।।

मन्दिर में मुझे लिया बुला, सीस सखी मेरा दिया झुका।
इक पल में ही राम ने, देख सखी मुझे लूट लिया।।

सामने थे श्याम खड़े, राधे भी सखी संग में थीं।
दोनों को भी देख मुख से, राम राम बस राम बही।।

मुझे राम ही दर्शाये थे, हम राम राम कह पाये थे।
अन्य भाव कोई इस मन में, वहाँ नहीं उठ पाये थे।।

राम कथा मैंने नहीं पढ़ी, रामायण भी आये ना।
पर राम बिना कोई जीवन है, यह समझ अब आये ना।।

कौन जीवन इस जग में, जो जन्म नहीं मेरे राम का?
कौन अंग कहाँ देखूँ, जो अंग नहीं भगवान का?

पर इस तन की मैं बात कहूँ, इस लब ने बस राम कहा।
इस दिन से निरन्तर ही, इस हृदय में नाम बहा।।

राम राम ही कहा किया, और राम को पुकारे गया।
हृदय में राम विराजे हैं, मैं राम राम निहारे गया।।

प्रथम था राम ने राम कहा, फिर तड़प कर पुकार लिया।
भाव लड़ी इक बनने लगी, सोचा राम निहार लिया।।

हर भाव माल री बना करी, मैं चरणन् में ही चढ़ाती रही।
राम चरण में बैठ सखी, मैं राम के गीत ही गाती रही।।

पर दर्शन प्यासी अखियाँ यह, नित्य ही तो बरसाती रहीं।
लब मेरे भी शुष्क भये, उसको ही तो बुलाती रही।।

पायल को बांधे हुए, यह पाद भी झूम उठे।
बिन पायल के देख सखी, झननन् पायल झूम उठे।।

नित नव गान यह कण्ठ कहे, नित नव भाव लब से बहें।
राम ही हृदय विराजे हैं, मन ही नित्य वा आरती ले।।

आसन मन ने लगाया है, आन्तर मन्दिर अब भया।
राम मेरा जो मन्दिर में, हृदय में मेरे आ बैठा।।

पर बाह्य दर्शन नहीं मिले, राम राम सब राम भया।
राम भाव सब देखे हूँ, पर दर्शन अभी नहीं हुआ।।

राम मैं तुमको कहती हूँ, इक बेरी अब आ जावो।
मेरी अन्तिम घड़ियाँ आई हैं, दर्शन अब तो दिखा जावो।।

चित्रपट में चित्र ज्यों,
आरम्भ हुआ नहीं बदल सके..

एतस्माज्जायते प्राणो मनः सर्वेन्द्रियाणि च।
खं वायुर्ज्योतिरापः पृथिवी विश्वस्य धारिणी।।

मुण्डकोपनिषद - २/१/३

शब्दार्थः

इसी परमेश्वर से प्राण उत्पन्न होता है तथा मन, अन्तःकरण, समस्त इन्द्रियाँ, आकाश, वायु, तेज, जल और सम्पूर्ण प्राणियों को धारण करने वाली पृथ्वी ये सब उत्पन्न होते हैं।

तत्व विस्तारः

निर्गुणिया वह परम ब्रह्म, माया का जब संग करे।
कारण तन वह आप भये, सूक्ष्म बनी फिर रूप धरे।।१।।

निर्गुण ब्रह्म सगुण भये, निराकार कहें रे रूप धरे।
निर्गुणिया हो गुण बधित, नाम रूप कहें आप धरे।।२।।

वही प्राण भये वही मन भये, इन्द्रिय गण वह आप भये।
आकाश वायु अग्न भये, पृथ्वी जल भी आप भये।।३।।

तत्व सार गर समझ ले, एक सार जो जान ले।
पृथ्वी पृथ्वी ही रहे, धरे रूप पर जान ले।।४।।

सूर्य की ज्योति में जो हो, सूर्य को क्या जान ले।
सूर्य सों रे प्राण पाये, या जल पाये जान ले।।५।।

परम चेतन सत्ता बिना, प्रत्यक्ष जग ना टिक सके।
स्वप्न दृष्टा के बिना, ज्यों स्वप्न ना टिक सके।।६।।

क्रिया जगत प्राण कह लो, मन अनुसंधानी कहो।
इन्द्रिय गण को ज्ञानदे, संग बाह्य गोचर कहो।।७।।

महाभूत स्थूल रूप, परम सत्ता पर आश्रित है।
जो माटी कृत् माटी रूप, माटी पर ही आश्रित है।।८।।

स्वप्न के दृष्टा के बिना, ज्यों सत्ता ही ना रहे।
उस परम के बिना, जग की सत्ता रे ना रहे।।९।।

समष्टि कोण से देख्र कहें, स्थूल तन रे वह ही है।
धारणकर पृथ्वी रे कहें, बस जन्मदे वह ही है।।१०।।

विश्व धारणी भूमि वह, हर कण कण रे वह ही है।
आकाश वह वायु वह, तेज जल रे वह ही है।।११।।

मन है वह स्थिति है वह, स्वभाव भी रे वह ही है।
तन्मात्रा महा भूतन् की, आन्तर लोक भी वह ही है।।१२।।

तैजस वह अरे भाव वह, अरे नाम भी रे वह ही है।
अधिभूत अरे अधियज्ञ, पूर्ण जो है वह ही है।।१३।।

जन्मदे वह रे यहाँ कहें, कारण एको वह ही है।
आप कहें फिर समझ ले, करे धारण रे वह ही है।।१४।।

अभाव रहित वह अजर अमर, परम अधिष्ठान वह ही है।
सर्व नियन्ता अनुमन्ता, ईषण कर्ता वह ही है।।१५।।

परम सत्त्व यह समझ ले, एक तत्व रे वह ही है।
मन रे अब तो जान ले, अखण्ड रस इक वह ही है।।१६।।

भाव प्रवाह भी वह ही है, भाव रूप भी वह ही है।
भाव कारण वह ही है, भाव परे पर वह ही है।।१७।।

भावन् से उसे क्या जानें, उनको मन्द ही होना है।
मौन होये करी उनको, जान ले बन्द ही होना है।।१८।।

मनो प्रवाह अब बन्द होये, चिन्तन पूरा बन्द होये।
संकल्प मिटे विकल्प मिटे, बाह्य कर्म संग बन्द होये।।१९।।

चित्रालय में जा कर के, चित्र ज्यों रे आरम्भ होये।
स्वतः सभी कुछ होता है, जब लग वह ना बन्द होये।।२०।।

वहाँ भाव बहें रोयें हँस दें, बहु यत्न भी होते हैं।
पूर्व में जो हो चुके, वही कथन तो होते हैं।।२१।।

नर नारी ने मिल करके, एक चित्र बना दिया।
नर रचयिता ने जो कहा, सामने वह ही धरा दिया।।२२।।

कर्म तो तेरे हो चुके, चित्र पाछे देख रहे।
उसी विधि निज कर्मन् के, बाह्य चित्र ही देख रहे।।२३।।

चित्रपट में चित्र ज्यों, आरम्भ हुआ नहीं बदल सके।
जो जो उसमें है भरा, वह ही सामने प्रकट भये।।२४।।

उसी विधि अरे मनवा, मनो खिलवाड़ आरम्भ भये।
पूर्व संचित संस्कार, चित्र आधार रे अब भये।।२५।।

चेतन सा ज्यों चित्र लगे, चित्रपट पे जो आये।
उसी विधि चेतन लगे, सामने जो तेरे आ जाये।।२६।।

जड़ जंगम उस चित्र में, ज्यों तू देखे जाता है।
उसी विधि रे इस जग में, जड़ चेतन दर्शाता है।।२७।।

रेखा ही कारण तन है, संचित सार रे उसे कहो।
कारण रेखा विधि चित्र ही, पूर्व अंकित आकृति ही हो।।२८।।

ज्योति उसपे जो रे पड़े, प्रकाशित चित्रपट पे हो।
उसी विधि कर्मन् की, आकृति जग विस्तृत रे हो।।२९।।

जो चित्र रे सामने आये है, जड़ है बदल वह ना पाये।
आकृति जो है भरी हुई, वह ही सामने आ जाये।।३०।।

कारण तन सों उस विध ही, पूर्ण जग यह प्रकट रे हो।
मिथ्या अहम् रे भर करी, महा चेतन निज को कहो।।३१।।

गर इतना तू समझ सको, सत्त्व समझ आ जायेगा।
कर्तृत्व भाव फिर मनो भाव, और अहम् टिक नहीं पायेगा।।३२।।

यही समझावन् कारण वह, बहु विधि रे कहते हैं।
जो है सब बस वह ही है, विविध विधि रे कहते हैं।।३३।।

प्राण है वह जो चित्र में, चित्रपट में जाये बसे।
संसरणा जो भी वहाँ पे हो, उससों ही प्रेरित होये।।३४।।

जड़ जंगम जो चित्र में, विस्तृत देख है हो रहा।
पूर्व कृत् आकृति में भरा, सम्मुख स्थित हो रहा।।३५।।

आधुनिक कर्म वह नहीं नहीं, पूर्व कर्म प्रतिकार है।
संचित कर्म बीज का, फल रूप झंकार है।।३६।।

गर तू इतना समझ ले, संग कहीं पे ना रहे।
कर्तृत्व भाव फिर कहाँ रहे, जब अहम् कहीं पे नहीं रहे।।३७।।

जाने निश्चित कर्म रे हों, जड़ कर्म वह सारे हैं।
भाव प्रवाह यह मनो रूप, कर्मन् के पसारे हैं।।३८।।

नाहक संग रे छोड़ दे, फिर राग द्वेष रे कहाँ रहे।
जो होये सो हुआ करे, अहम् शेष रे कहाँ रहे।।३९।।

यही समझाने कारण वह, कभी कहें सब ही है वह।
कभी हँस कर अरे देख कहें, पूर्ण को जन्म दें वह।।४०।।

कभी कहें कुछ है ही नहीं, सोच ले चित्र की स्थिति है क्या।
सब स्वतः ही हो रहा, पर कहो कभी हुआ है क्या।।४१।।

जागृत तू जो सत्य कहे, प्रत्यक्ष दृश्य जो देख्र रहे।
सोच ज़रा वह चित्र तेरा, कब लौ क्योंकर अब रहे।।४२।।

चित्र का कारण जान लिया, जो करे रे धारण जान लिया।
परम तत्व है बहु परे, सत्त्व यह अब जान लिया।।४३।।

क्या अपनाये यह मन, यह मन नहीं है जान लिया।
याद रहे अरे चित्र के, नट ने ही सब जान लिया।।४४।।

राम कहा तो नट कहे, राम राम सब तू ही है।
तनो नट बन तू ही कहे, नाटक में नट तू ही है।।४५।।

नाम रूप सब तेरे हैं, तेरा कहा ही कह रहे।
क्यों न कहूँ हे राम मेरे, तू सब रे आप ही कह रहे।।४६।।

कर्म जन्मे कर्म रे मरे, कर्म रूप धरी आये हैं।
कर्मन् ने ही राम मेरे, भाव यह देख्र बहाये हैं।।४७।।

जड़ भाव जड़ भाषा में, जड़ नाटक में कह रहे।
जड़ तन से जड़ अहम् से, राम आप ही कह रहे।।४८।।

जो चाहना तेरी रे कहो, अपना यहाँ पर कुछ नहीं।
अहम् कहाँ पर टिक पाये, जब अहम् रहा ही कुछ नहीं।।४९।।

महा मौन है रूप मेरा, मौन ही है स्वरूप मेरा।
चित्रपट पे सब होये, होके कुछ नहीं हो रहा।।५०।।

१०-९-६१

आपका आश्वासन,
'जो मैं दे देता हूँ, उसे वापिस नहीं लेता!'

श्रीमती पम्मी महता

चित्र में श्रीमती पम्मी महता, परम पूज्य माँ एवं अन्य सदस्य

हे श्री हरि माँ, आपकी कृपाओं का प्रसाद तो इतना अनूठा व भव्य है कि मुझे इतनी आर्त देई, प्रार्थनाओं से भर लिया। यह तो अलौकिक प्रसाद था जो आप ही के करम से, आप से पा रही थी..

आप ही से हे श्री हरि माँ, यह हृदय इस क़दर भर जाता कि प्रार्थनाओं ही प्रार्थनाओं में करबद्ध होकर उतर आता। जहाँ इस हृदय को आप स्वयं याचना के लिए नतमस्तक करी, करबद्ध प्रार्थनाओं में उतार लें तो वहाँ हर शै बहाव बन कर बहने लगती है!

आपके अपनाये इस हृदय के प्रति आभार व्यक्त करने के सिवाय और कर भी क्या सकती है आपकी यह कनीज़..

जिस क़दर आपने नवाज़ा है इसे,
ऐसे तो हे माँ नवाज़ता नहीं कोई!
जिस तरह अपना आप जानकर आपने दिया,
ऐसे तो हे नाथ सनाथ करने आता नहीं कोई!

सच तो यह है माँ कि सगुणवेष में जगतपति देश, काल व परिस्थितियों के अनुरूप ही श्री विग्रह धारण करके और सद्गुरु बनी हमें हमारी चित्त-ग्रंथियों से अवगत कराते हैं-

कैसे हैं हम?

तन मन बुद्धि हम नहीं हैं..

स्वयं को अपना कर हमने ही 'मैं' का विस्तार किया हुआ है..

हमारा जो वास्तविक परिचय है, उसको तो जैसे हम युगों से भूले हुये हैं.. हम आत्मा हैं और परमात्मा का अंश हैं! हे कृपालु दयालु नाथ, आपने अपनी करुण-कृपा में ला हमें हमारे ही जीवन सत्य से अवगत कराये करी, हमारा सच्चा परिचय दे कर सही दिशा निर्देश दिया, 'परमात्मा का अंश होने का ही अपना सच्चा परिचय देते हुये.. सतपथ पर चलते हुये जीवन निर्वाह करो!'

कृतज्ञता से भरा सीस एक बार झुका, तो झुका ही रह गया.. आपके असीम अनुग्रह का ही दिव्य प्रसाद है कि आपने अपने क़दमों से इस सीस को कभी अलग ही नहीं किया!

मैं क्या हूँ.. कैसी हूँ.. क्यों हूँ..

इस पर चित्त टिका कर क्या मिलेगा? कुछ भी तो हासिल नहीं होगा। हाँ, आपकी दी रोशनी की तरफ क़दम बढ़ गये तो हो सकता है कि ज़िन्दगी की रवायनगी में बहते बहते रास्ता बदल जाये। इसी एक ही सत्य से अवगत कराये रखते हैं आप!

ख़ुशनसीब हूँ, जो हे श्री हरि माँ, आपने आंतर में अपने प्यार की दस्तक देकर उसकी मधुरता का एहसास दिला दिया.. आपसे मिली दिव्य-दृष्टि का ही प्रसाद है, तो ही तो जीवन रूपी वीणा पर आप ही के स्वर सध जाते हैं। जब हृदय-वीणा पर आपके सिवा कुछ और नहीं रहता तो आप ही के प्यार का संगीत गूँजने लगता है।

जीवन चहुँ ओर से सिमट कर आप ही में जा टिकता है। आपके क़दमों से लिपट जाता है कभी, तो कभी आपकी वाणी के परम सत्य की गहराई में उतर आता है.. आपके अनुभवी क़दमों का सदक़ा उतार, उन्हें सदा के लिए धारण करने की ललक पैदा हो जाती है। कैसे कैसे हे परम कल्याणी माँ, आप अपने से सनाथ करते जाते हैं।

मुझे पता है कि मेरी झोली बहुत संकुचित है.. मगर वह करिश्मा भी तो साथ साथ देखा कि इस हृदय-दामन को आप स्वयं ही विशाल करते जाते हैं और स्वयं की अनमोल दौलत को भरते ही चले जाते हैं! आप अनन्त की देनों की तो कोई सीमा ही नहीं!

असीम अपनी असीमता नहीं छोड़ता.. अपने अनन्त बहाव में ही बहा कर लिए चलते हैं। आप माँ ने कहीं भी विराम नहीं दिया। एक ऐसी निरन्तरता भरे क़दम हैं आपके, जो अनथक चलते ही चले! इस हृदय-स्थली पर उतर कर, आपकी दी जिज्ञासा व प्रेरणा का स्रोत कहीं भी मुक़ाम की या विराम की चाहत को उठने ही नहीं देता।

आगे से आगे आपको जानने व आपके दिव्य दर्शनों की अभिलाषा बनी रहती है, आप ही की कृपा से! तभी पता चलता है जीव के हाथ में कुछ नहीं। जो स्वयं करण कारण हैं, वही सभी करते हैं! इसी लिए आपकी लीला में शरीक होने का जो परम सौभाग्य आपने अपनी इस कनीज़ को दिया हुआ है, उसके लिए पूर्ण जीवन भी आप पर वार दूँ तो कम है।

स्वयं को आपके श्री चरणन् पर अर्पित व समर्पित कर पाने की आप से असीस पाये रहूँ, तो मेरा यह तुच्छ जीवन आप श्री हरि जगद् जननी माँ से धन्य धन्य हुआ रहेगा। आप प्रभु माँ का यह आश्वासन, 'जो मैं दे देता हूँ, उसे वापिस नहीं लेता!' आप ही बताइये, फिर आप ग़रीबनवाज़ की नवाज़िशों का हर पल सदक़ा कैसा ना करूँ.?! आप ही मुझमें विस्तार पायें, यही प्रार्थना करती हूँ..

आप ही की जय हो व आप ही विजयी हों माँ, इस जीवन में.. जो इस जीवन की सार्थकता का अनुभव हो जाये इसे! ईश्वर करे, आपकी कृपा से वही कह पाऊँ जी जान से जो मेरे साईं रब को प्रिय लगे! हे नाथ, इससे वही करवाना जो आपके श्री चरणन् पर परवान हो जाये। मन, वचन, काया को अपने में पूर्णतया स्थिर कर लीजियेगा जो जन्म-जन्म की भटकना को आप ही में विराम मिल जाये।

हे श्री हरि नाथ, आज वियोग में जिस संयोग का वरदान दिया है मुझे और मेरे सीस पर अपना वरदहस्त रखा हुआ है, इसके लिए अतीव विनीत प्रार्थना करती हूँ, 'सदा के लिए इसपे कृपा दृष्टि बनाये रखियेगा, हे मेरे परम दयालु कृपालु नाथ, जो यह आप के प्रति पूर्णतया अर्पित व समर्पित होने का परम सौभाग्य पाये रहे.. जब तलक आपसे आप ही में विराम न पा जाऊँ।' आमीन ❖

स्वरूप तथा ऋषि-स्थिति

पिता जी

स्वरूप किसको कहते हैं, स्वरूप को जानने वाले ऋषिगण की स्थिति क्या होगी? मैं फिर से स्पष्ट रूप में जानना चाहता हूँ कि कैसी बुद्धि स्वरूप जान सकती है?

सारांश

आंतरिक तत्व रस सार तथा निजी विशेषता, जो निहित रूप में जीवन के हर पहलू में विद्यमान होती है, वही स्वरूप है। ब्रह्मनिष्ठ ऋषि तथा ब्राह्मी स्थिति में स्थित मुनि ही महा विशिष्ट, सूक्ष्म तथा तीक्ष्ण बुद्धि से परम के तद्रूप हो जाते हैं। जीव के पूछने पर ही वह निजी स्वरूप की कहते हैं।

पूज्य माँ के पिता जी श्री सी एल आनन्द

प्रश्न अर्पण

स्वरूप किसको कहते हैं, स्वरूप सार आज तुम कहो।
ऋषिगण की स्थिति क्या हो, संक्षिप्त विस्तार तुम करो।।१।।

कैसी बुद्धि जाने उसे, तत्व अर्थ आज तुम कहो।
पूर्व जो कही आये हो, पुनि स्पष्ट उसको करो।।२।।

तत्व ज्ञान

ब्रह्म स्वरूप की बात कहें, स्वरूप समझ किसे कहते हैं।
आंतर तत्व सार प्राकट्य, को स्वरूप ही कहते हैं।।३।।

आंतरिक विशेष वास्तविकता, यथार्थ रूप को कहते हैं।
तत्व उद्देश्य विलक्षणता, तात्त्विक आकृति को कहते हैं।।४।।

आंतर ज्योति प्रदर्शक, जीवन रूप को कहते हैं।
विशिष्ट उद्देश्य निरूपणकर, प्रकृति कार्य को कहते हैं।।५।।

अक्षर ब्रह्म परमात्म, स्वभाव अध्यात्म ही तो है।
स्थूल सूक्ष्म कारण प्राकट्य, ब्रह्म स्वरूप ही तो है।।६।।

महा सूक्ष्म तीक्ष्ण बुद्धि, स्थितप्रज्ञ उसे जान सके।
असत् आवृत न जिसे करे, वह ही सत् पहचान सके।।७।।

ऋषिगण स्थिति भी जान लो, गुणातीत वह गुण से परे।
गुण प्रभावित वह न हों, पर गुणन् में वर्त रहे।।८।।

पूर्ण ब्रह्म है मान लिया, कर्तृत्व भाव वहाँ नहीं रहा।
अहंकार अभाव हुआ, भोक्तृत्व भाव भी चला गया।।९।।

सत् में जब है कोई टिके, मान्यता एको नहीं रहे।
सत् है या असत् है वह, द्वंद्व हिय में नहीं उठे।।१०।।

निरपेक्ष भये निःसंग भये, उदासीन वह हो गये।
गुण चक्र से हुए परे, सत् आसीन वह हो गये।।११।।

आशा तृष्णा सब गई, जाने जो मिले स्वतः मिले।
जो बिछुड़े स्वतः बिछुड़े, कर्म चक्र सब किया करे।।१२।।

भूत भाव अभाव हुआ, समत्व स्थित वह हो गये।
योग की भी वहाँ बात गई, जब एक रूप वह हो गये।।१३।।

निज गुण सम्पूर्ण भूले, गुण प्रभाव ही नहीं रहा।
गुण संग अभाव हुआ, योनि चक्र भंजित हुआ।।१४।।

निज स्वरूप उनका जानी, 'मैं' राम की हो गई।
राममय ऐसी हुई, 'मैं' कहीं पे नहीं रही।।१५।।

तन गया मन बुद्धि गये, 'मैं' लय ब्रह्म में हो गया।
शेष जो कुछ भी रहा, ब्रह्म स्वरूप ही रह गया।।१६।।

ऐसे जाने ब्रह्म को जो, ब्रह्म का जो वर्णन करे।
कैसी बुद्धि पहुँचे वहाँ, इसको भी तू समझ ले।।१७।।

अति सूक्ष्म तीक्ष्ण बुद्धि, केवल सत् में जो टिके।
प्रवीण दक्ष ही दुर्दशम्, अदृश्य तत्व को देख सके।।१८।।

भासित सत् वास्तविक सत्, का निर्णय वह ले सके।
अनुरूप निरावरण हो, निर्भय हो उसे देख सके।।१९।।

युक्ति विशिष्ट वह हो जाये, उक्ति विशिष्ट तो हो सके।
गुणन् से जब हो परे, सत्यपूर्ण तब वाक् कहे।।२०।।

महा गुह्य रहस्य है यह, निर्लिप्त वहाँ पे पहुँच सके।
तन मन बुद्धि सों ही जो, लिप्त रहे न पहुँच सके।।२१।।

ऋषिगण की जो बात कहो, उनकी स्थिति भी देख लो।
स्वरूप उनका देख लो, तब ही राज़ वह समझ सको।।२२।।

ज्ञान अज्ञान को वह जानें, सत् असत् वह जाने हैं।
माया क्या क्या कर्मगति, गुण गति पहचाने हैं।।२३।।

ज्ञानघन वह आप भये, निज स्वरूप की कहते हैं।
तुम कहो ब्रह्म की बात कहें, हम कहें वह अपनी कहते हैं।।२४।।

यथार्थ सत् में वह बसे, असत् में सत् आभास गया।
वास्तविकता में जब रहें, मान्यता का भी भाव गया।।२५।।

भ्रांति कारक 'मैं' गया, व्यक्तिगतता की बात गई।
कर्ता का गुमान गया, बाक़ी सत्य ही रह गई।।२६।।

जीवन से वह मुक्त हुए, जीवन 'मैं' का नहीं रहा।
असत् जो तजा सत् ही रहा, शेष आनंद ही रह गया।।२७।।

विश्वास गया आश्रय गया, अविश्वास की बात गई।
हक़ीक़त में वह वास करें, अंधियारी कहीं नहीं रही।।२८।।

बुद्धि है पर बुद्धि नहीं, 'मैं' की बुद्धि नहीं रही।
गुण वहाँ से बहते हैं, पर 'मैं' की गुण नहीं रही।।२९।।

त्रिगुणात्मिका शक्ति रचित, दुस्तर माया जान गये।
गुण गुणन् में वर्त रहे, गुण विवेक राह जान गये।।३०।।

ब्रह्मनिष्ठ ऋषि ब्रह्मस्थित मुनि, परम में जा के स्थित हुए।
'मैं' की जा पे तुम कह लो, ब्रह्म आप ही स्थित हुए।।३१।।

गीता वेद उपनिषद् को, ब्रह्म वाणी ही कहते हैं।
जिनके राही वह बही, उनमें ब्रह्म ही रहते हैं।।३२।।

'मैं' ज्ञान को छू न सकी, 'मैं' वहाँ पे थी ही नहीं।
मन बुद्धि मल नहीं चढ़ी, 'मैं' मल ही जब थी नहीं।।३३।।

जो कहे नहीं उसने कहा, जो प्रकटे नहीं वह प्रकट हुआ।
वाक् परे ने वाक् कहा, कर रहित ने लिख्र दिया।।३४।।

पर ख़ुद कुछ भी नहीं कहा, किसी पूछ लिया वह बहने लगे।
परिप्रश्न अनुकूल ही तो, बिन कहे सब कहने लगे।।३५।।

प्रश्नकर्ता प्रधान भया, जिज्ञासु वहाँ प्रधान है।
ऋषि नाम की बात नहीं, वहाँ ब्रह्म विराजमान है।।३६।।

२२.७.१९६६

Form IV (See Rule 8)

1. Place of Publication: Arpana Trust, Madhuban, Karnal 132037, Haryana.
2. Periodicity of Publication: Quarterly
3. Printer's name: Mr. Ajay Mittal Nationality: Indian
   Address: Sona Printers Pvt. Ltd., F-86/1 Okhla Industrial Area, Phase I, New Delhi 110020
4. Publisher's name: Mr. Harishwar Dayal Nationality: Indian
   Address: Arpana Trust, Madhuban, Karnal 132037, Haryana.
5. Editor's name: Ms. Poonam Malik Nationality: Indian
   Address: Arpana Trust, Madhuban, Karnal 132037, Haryana.
6. Names and addresses of individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than one percent of the total capital: Arpana Trust.

I, Harishwar Dayal, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Harishwar Dayal
Arpana Trust, Madhuban, Karnal, Haryana

तू तन नहीं, तू आत्मा है..
इसी में स्थित होने के यत्न कर!

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही।।

श्रीमद्भगवद्गीता २/२२

भगवान यहाँ एक साधारण सा दृष्टान्त देकर जन्म-मरण का राज़ कहते हैं :

शब्दार्थ :

१. जैसे मनुष्य पुराने वस्त्र त्याग कर,
२. दूसरे नये वस्त्रों को ग्रहण करता है,
३. वैसे ही, फटे पुराने शरीर को त्याग कर,
४. जीवात्मा दूसरे नये शरीरों को प्राप्त होता है।

तत्व विस्तार :

भगवान अर्जुन की व्याकुलता, शोक और भय को मिटाने के लिये कहते हैं :

१. तू जन्म-मरण का भय न कर।
२. तू जन्म-मरण के कारण घबरा नहीं।
३. तू जन्म-मरण का ध्यान करके युद्ध से विमुक्त होने का यत्न न कर।
४. तू जन्म-मरण का ध्यान करके अपने कर्तव्य से विमुख न हो; अपना धर्म न छोड़।

अनादि काल में एक जीवन के कुछ

वर्ष क्या अर्थ रखते हैं? जीवात्मा अनेकों शरीर और अनेकों रूप धारण करता है। वह अनेकों नामों से पुकारा जाता है और अनेकों आर्थिक व्यवसायों को ग्रहण करता है। जीव अनेकों कुलों में जन्म लेता है।

भगवान कहते हैं कि ज्यों तुम लोग फटे पुराने कपड़े उतार कर नये कपड़े पहन लेते हो, उसी प्रकार जीवात्मा पुराना शरीर छोड़ कर नया शरीर ग्रहण कर लेता है।

शरीरों का परिवर्तन होता ही रहता है। आज नहीं तो कल, ये शरीर मरेंगे ही! तो इन शरीरों की मृत्यु से क्यों घबराता है? ये तो आने जाने ही होते हैं।

फिर सोच नन्हीं! पिछले जन्म में तू कौन थी, इससे आज तुझे क्या फ़र्क़ पड़ता है? तू अमीर थी या ग़रीब थी, तू बुरी थी या भली थी, तू उच्च पद वाली थी या चाकर थी, आज तुझे क्या फ़र्क़ पड़ता है? किन्तु आज तेरी दुनिया कैसी है, इसका तो तुझे फ़र्क़ पड़ता है।

यदि आपका जीवन कर्तव्यपरायण होता, धर्मपरायण होता, यदि सत्गुण को आपने जहान में स्थापित किया होता, तो मेरी जान्! यह दुनिया सुन्दर ही होती। भगवान कहते हैं इस दृष्टिकोण से भी देख ले, तो भी आततायियों से युद्ध करना उचित ही है। अन्यायी, पापपूर्ण तथा लोभी गण तो अधर्म ही फैलायेंगे। गर राज्य करने वाले ही पतित लोग हों, तो जनता का पतन हो जायेगा।

इसलिये भगवान कहते हैं, 'तू घबरा नहीं। उठ! युद्ध कर।'

नन्हीं! जैसा संसार छोड़ कर जाओगे, उसी में ही तो पुनः जन्म पाना है।

नन्हीं साधिका!

१. तू भी अपना कर्तव्य समझ ले।
२. तू भी अपने जीवन का धर्म समझ ले।
३. अपने कर्तव्य से विमुख होने के यत्न न कर।
४. ज्ञान को इतना विकृत न कर दे कि तू पंगु बन जाये।
५. ज्ञान के स्वरूप तथा रूप को समझ ले और उसे अपने जीवन में लाने के यत्न कर।
६. सत् पथिक जीवन से नहीं डरते।
७. सत् पथिक मृत्यु से नहीं डरते।
८. सत् पथिक दुःख से नहीं डरते।
९. सत् पथिक अत्याचारी के अत्याचार से नहीं डरते।
१०. सत् पथिक तो आन्तर बाह्य में नित्य सत् स्थापित करने में लगे रहते हैं।
११. वास्तव में आन्तरिक सत्यता का प्रमाण ही बाह्य असत् से युद्ध है।
१२. देवत्व कभी असुरत्व के सामने नहीं झुकता।
१३. देवता तो देवत्व के सामने झुकते हैं।
१४. देवता कर्तव्य के सामने झुकते हैं।
१५. देवता न्याय के चरण में झुकते हैं।
१६. देवता प्रेम के चरण में झुकते हैं।

नन्हीं! कहते हैं, भगवान स्वयं भक्तों के पीछे पीछे चलते हैं।

तू यह भी जान कि आत्मा अजर अमर है और तू आत्मा है, तन नहीं है। इसलिये अपना भय छोड़ दे। आत्मा कपड़ों की तरह शरीरों को धारण करता है और कपड़ों की तरह शरीरों को बदलता है, यह जानकर तू शोक और क्षोभ को छोड़ दे।

नन्हीं! पहले जीवन में :

१. दैवी गुण आने अनिवार्य है।

२. झुकाव सीखना अनिवार्य है।

३. सहिष्णुता अनिवार्य है।

४. निरपेक्ष भाव में जीना अनिवार्य है।

५. बुरा भला, दोनों के प्रति समभाव होने का अभ्यास अनिवार्य है।

साधक के लिये युद्ध का प्रश्न बाद में उठता है, वरना हर बार भड़क कर औरों से भिड़ जाओगे। आपके भड़काव की बुनियाद अहंकार होगा, प्रेम नहीं। आपके भड़काव की बुनियाद क्रोध होगा, न्याय नहीं।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।।

श्रीमद्भगवद्गीता २/२३

अर्जुन को भगवान कृष्ण पुनः आत्म तत्व का अव्यय तथा नित्य स्वरूप समझाते हुए कहने लगे :

शब्दार्थ :

१. इस आत्मा को शस्त्र आदि काट नहीं सकते;
२. इस आत्मा को अग्न जला नहीं सकती;
३. इस आत्मा को जल गीला नहीं कर सकता;
४. इस आत्मा को वायु सुखा नहीं सकती।

तत्व विस्तार :

भगवान कहते हैं 'अर्जुन! तू युद्ध कर!'

१. आत्मा पर इसका कोई असर नहीं होगा।

२. शस्त्र आदि इसे काट नहीं सकते। प्रहार तन पर होते हैं, तन कट जाते हैं, किन्तु तन कट जाने से तन की मृत्यु होती है, आत्मा तो अप्रभावित रहता है।

३. अग्नि भी तन को भस्मीभूत कर सकती है किन्तु आत्मा को नहीं जला सकती। यह आत्मा जल जाने वाली वस्तु नहीं। आत्मा अग्न से नित्य अप्रभावित रहता है।

४. जल भी आत्मा को गीला नहीं कर सकता, बहा नहीं सकता, डुबो नहीं सकता। आत्मा जल से नित्य अप्रभावित रहता है।

५. वायु भी आत्मा को सुखा नहीं सकता। वायु का वेग आत्मा को उड़ा नहीं सकता। वायु से भी आत्मा नित्य अप्रभावित रहता है।

सो भगवान कहते हैं कि 'अर्जुन! तू नाहक युद्ध का भय करता है।'

इसे साधक के दृष्टिकोण से समझ :

क) जो आत्म स्वरूप तू आप है, उसे जान ले।

ख) जो आत्म स्वरूप तू आप है, केवल वही ज्ञातव्य है।

ग) जो आत्म स्वरूप तू आप है, वही सर्वोच्च प्राप्तव्य है।

घ) तू तन नहीं, तू आत्मा है। इसी में स्थित होने के यत्न कर।

ङ) अखण्ड एकरस आत्मा तू आप है।

च) मृत्यु और जन्म से परे तू आप है।

छ) पंच महाभूतों के परे तू आप है।

ज) तन जलता है, तन शस्त्रों से कटता है, आत्म स्वरूप को कुछ नहीं होता। तू आत्मवान बन, तब तुझे सब समझ आ जायेगा। ❖

आत्मा फटे-पुराने वस्त्रों को त्याग कर..
नये वस्त्र ग्रहण करता है!

परम पूज्य माँ की साधना के प्रारम्भ से ही उनके जीवन में मृत्यु के साक्षित्व का विशेष महत्व रहा है। पूज्य माँ के जीवन का उदाहरण हमें यह दर्शाता है कि केवल मृत्यु ही जीवन का एक निश्चित, अवश्यम्भावी सत्य है.. जिसकी स्वीकृति मात्र से जीव तनो संग के बंधन से मुक्त हो सकता है।

गत दिनों अर्पणा के दो अतीव प्रिय सदस्य अपनी अपनी दिव्य यात्रा को चल दिये.. उन्हीं दिव्य आत्माओं को समर्पित हैं ये श्रद्धासुमन :

अर्पणा परिवार के एक अभिन्न अंग, हमारे प्रिय इन्दु दीदी, ९ *जनवरी २०२१* को प्रभु चरणों में सदा के लिए लीन हो गये..

अतीव प्रिय मेरे साथी.. *- आभा भण्डारी*

'मेरे साथी'.. तुम मुझे यही कह कर पुकारते थे न.. याद है? और मेरी स्मृति ५ दशकों से भी अधिक समय की उस डगर पर मुझे वापिस ले जा रही है जहाँ हम एक साथ चले..

आपकी गर्मजोशी, आपकी ईमानदारी, आपका स्नेह, आपकी अतुलनीय स्मृति.. आपकी मनमोहक सी मुसकान व हँसी, अपने विश्वास को परवान चढ़ाने की आपकी हिम्मत.. इन सबकी मिश्रित सुगन्ध मेरे दिलो-दिमाग पर छाई है।

वास्तव में एक अविश्वासनीय पथ, जिस पर हम एक साथ चले.. ६० के दशक के उत्तरार्ध से आरम्भ हुआ हमारा मेल-जोल.. जब मंजू दीदी के मधुबन में रहने के बाद हमारा सम्पूर्ण दयाल परिवार भी जल्द ही परम पूज्य माँ के पास अर्पणा में रहने लगा था। आप जंगपुरा स्थित आनन्द नर्सिंग होम में काम करने आते थे। कितने मस्ती और हँसी से भरपूर दिन हुआ करते थे.. और उतनी ही गम्भीरता से काम भी! अपने काम के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित एवं तद्रूप होकर दक्षता के साथ आप अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते थे। जिस सहजता से आप सभी को अपने प्रेम भरे आलिंगन में लिये लिये चलते रहे.. वह वास्तव में दुर्लभ है। ऐसी तद्रूपता एवं दक्षता पूज्य माँ के प्रति प्रेम से ही हमें मिली जिसे आपने दिल में गहराई से संजोया हुआ था।

परम पूज्य माँ, इन्दु दयाल एवं अर्पणा परिवार डिफेंस कॉलोनी में

इसके बाद आपने मधुबन में कितने सारे काम संभाले.. और कितने उत्साह के साथ! पब्लिकेशन्स की सेल्ज़, अस्पताल में ऑपरेशन थियटर (OT) में काम, अर्पणा द्वारा मंचित नाटकों के लिए वेशभूषा एवं रंगमंच सज्जा, हैंडीक्राफ्ट्स.. कैन्टीन.. और सब कुछ पूर्ण समर्पण एवं निःस्वार्थ भाव से! सच में, मंजू दीदी आपके लिए बहुत बड़ी प्रेरणा थीं, अक्सर आप मुझे यह बतलाया भी करते थे.. जैसे कि वह हम सबके लिए थीं.. लेकिन आप निश्चित रूप से उनकी राह पर चले.. स्वयं को दिव्य सेवा में समर्पित करने का पथ!

लेकिन शायद मुझे सबसे ज्यादा वे लम्हे याद हैं, जब आप डिफेन्स कॉलोनी में कुछ वर्षों के लिए रहे.. वहाँ से आप अर्पणा के कुछ कामों को प्रबन्धित किया करते थे.. उस समय हमारे पास जीवन के कई पहलुओं पर विचार-विमर्श करने के लिए पर्याप्त अवसर हुआ करते थे.. और अधिकतर परम पूज्य माँ के विषय में बातचीत करके हमें बेहद ख़ुशी मिला करती थी! सचमुच, आप कई प्रकार से एक भागीदार ही सिद्ध हुए। हमारे जीवन की बहुत सारी परिवर्तनकारी घटनाओं में भी आप मेरे साथ वहाँ पर ही थे.. मुझे विशेष रूप से वह क्षण याद है जब मुझे उस भयानक दुर्घटना की ख़बर मिली.. हमारे सबसे प्रिय रत्ती अंकल, रेवा दीदी, और प्रीती के हमारे बीच न रहने की ख़बर.. आप वहीं पर थे! उस महत्वपूर्ण समय पर आपकी उपस्थिति मुझे आश्वस्त करने के साथ साथ मेरे लिए बहुत सहायक थी।

मैं जब जब उस समय को याद करती हूँ, मुझे लगता है कि हमारे दिलों में परस्पर भावनाओं को समझने में कहीं कुछ कमी सी रह जाती है.. आज मैं अपने जीवन में आपकी उपस्थिति के लिए अपना आभार व्यक्त करना चाहती हूँ। भाग्य के थपेड़े अक्सर हमारे जीवन में से सबसे सुन्दर फूल भी ले जाते हैं.. मुझे गीता के इस कथन में बहुत विश्वास है, 'हमारी जीवन-यात्रा मृत्यु से बाधित हो सकती है लेकिन उसके बाद भी यह आगे चलती रहती है..' मैं प्रार्थना करती हूँ कि आपकी यह यात्रा सुन्दर, निर्विघ्न और तेज़ी से आपके दिव्य लक्ष्य की ओर आपको ले चले।

मुझे इस सच्चाई से जगाने के लिए भी आपका अति, अति धन्यवाद कि जीवन नाज़ुक है..

और किसी भी क्षण, कुछ भी हो सकता है! फिर भी,

कितना घमंड है मुझ में..

मैं अगले क्षण भी यहीं रहूँगी यह मानने के लिए!

मुझ से ज़्यादा अंधा कौन है.. मैं यह उम्मीद करती हूँ कि यह आँखें कभी बन्द ही नहीं होंगी!

मैं कितनी बहरी हो सकती हूँ.. जीवन के प्रत्येक क्षण को जाते हुए भी नहीं सुन पा रही.. भगवान के साथ एक होने के इस अनमोल अवसर को गँवा रही हूँ!

कितनी अगाधता से भरा है यह मन.. जो भटकता है अभी भी अन्य चरागाहों के लिए.. जब कि वास्तव में प्रत्येक पग उस दिव्यता की ओर बढ़ना चाहिए!

धन्यवाद प्रिय इन्दु.. मेरी बहन, मेरी मित्र एवं 'साथी' इन सब महत्वपूर्ण तथ्यों को मेरे हृदय में लाने के लिए धन्यवाद! आपका उज्ज्वल प्यार भरा चेहरा और दीप्तिमान मुसकान हमेशा मेरे आन्तर में बसी रहेगी।

बिदाई यात्रा की शुभकामनाएं!

डॉ. इला आनन्दः

प्रिय इन्दु मेरे लिए मेरी एक बेटी समान थी, एक बहुत सुन्दर बेटी! १९७५ में वह हमारे जंगपुरा स्थित नर्सिंग होम में आई। वह हमेशा वहाँ आने वालों का सबसे पहले अभिवादन करती थी.. चाहे वह मरीज़ हो या आगन्तुक, सभी अपनापन महसूस करते थे। हमारे लिए वह हमारी बड़ी बेटी थी.. जिसने हमारे व्यावसायिक और व्यक्तिगत जीवन दोनों में हमारी सहायता की। हमारे बच्चों के लिए वह एक बड़ी बहन थी। जब भी हमें ज़रूरत होती, न केवल वह दिन में बल्कि रात को भी हमारे साथ रुक जाती.. यह बात मैं कभी नहीं भुला सकती। जब हम मधुबन में रहने के लिए आये तो परम पूज्य माँ ने उन्हें 'उर्वशी पब्लिकेशन' में रखने का फैसला किया.. जहाँ उनके जैसे दृष्टिकोण एवं विशेषज्ञता की ही आवश्यकता थी। जब भी हम मिलते, वह हमेशा अपनी प्यारी सी

मुसकान के साथ मेरा स्वागत किया करती थी। उन्होंने अर्पणा अस्पताल को स्थापित करने में भी हमारी बहुत सहायता की। अब जब वह कैन्टीन की प्रभारी थी, मैं जब जब अर्पणा में आती.. तो एक गर्म कॉफी का कप मेरा इंतज़ार करता.. उनके अचानक चले जाने के इस सदमे से मैं अभी तक उबर नहीं पा रही और प्रार्थना करती हूँ कि वह भगवान के चरणों में शान्ति और संतोष पायें!

निरिति वैदः

हमारे प्रिय इन्दु दीदी अब शारीरिक रूप से हमारे बीच नहीं हैं.. इस बात का अभी तक मुझे यक़ीन नहीं हो पा रहा। उनके प्यार की गर्माहट, सभी अवसरों पर उनका स्नेहपूर्वक मिलना.. इस तथ्य को स्वीकारना बहुत मुश्किल हो रहा है। उनके साथ हमारा सम्बन्ध पिछले ४२-४३ वर्षों का है। मेरे माता पिता के लिए वह उनके अपने बच्चों में सबसे बड़ी थीं और मेरे एवं वरुण के लिए वह एक बेहद सुन्दर, प्यार करने वाली बड़ी बहन! हम सदा उनके साथ समय बिताने का इंतज़ार करते रहते थे। हमारे पापा, डॉ. ए.के. आनन्द के निधन के बाद परम पूज्य माँ ने मुझे वरुण के साथ मन्दिर में बैठ कर उनके सभी सुन्दर गुण याद करने को कहा। वास्तव में यही 'फ़ूल चुनना' होता है। आज मैं इन्दु दीदी के लिए भी ऐसा ही कर रही हूँ। उनके सुन्दर गुण.. लोगों को प्यार करना, पोषित करना और उनकी देखभाल करना जैसे गुण आज दुर्लभ हैं। उन्होंने अपने आसपास के लोगों की ख़ुशी में योगदान देने की पूरी कोशिश की। देर से ही सही, परन्तु अब से मैं भी सभी के प्रति प्रेमपूर्ण उदारता रखना चाहूंगी और ऐसा करने से उन्हें श्रद्धांजलि देने का मेरा यही एक प्रयास होगा।

अर्पणा अस्पताल की शुरुआत - परम पूज्य माँ के साथ
डॉ. इला आनन्द, पूज्य छोटे माँ, इन्दु दयाल एवं सिस्टर कमला सूरी

उनकी निष्पक्षता, ईमानदारी और अपने परिवार के रूप में सभी को स्वीकार करना, उनके विशेष गुण थे। उनकी सभी की भलाई में दिलचस्पी थी। उनके साथ इतनी सारी छोटी छोटी यादें जुड़ी हुई हैं.. बहुत लम्बी सूची है.. मुझे यक़ीन है, वह जहाँ भी होंगी.. ख़ुशियाँ लायेंगी एवं प्रभु के चरणों में शांति पायेंगी!

नुपुरः

हम सभी इन्दु मौसी के जीवंत व्यक्तित्व.. उनके प्रेम, करुणापूर्ण और उदार व्यवहार को हमेशा याद रखेंगे। सभी मिलने वालों को देने के लिए उनके पास अथाह प्यार था।

'मृत्यु एक जीवन को समाप्त करती है, एक रिश्ते को नहीं..' इस उद्धरण ने इन्दु मौसी के निधन के पश्चात् मुझे मानसिक शांति देने में बहुत सहायता की। हालांकि वह अब शारीरिक रूप से यहाँ नहीं हैं, मुझे यक़ीन है कि वह हम सबकी यादों में हमेशा रहेंगी।

डॉ. हरकीरत ढिल्लोंः

इन्दु आज हम सबको साथ लेकर आई है। इन्दु का इस प्रकार से चले जाना अचानक और अप्रत्याशित था। उनका फेसबुक पेज हमेशा सकारात्मक एवं सुन्दर सन्देशों से भरा होता था। हम सभी लगभग ५० वर्ष पहले मिले थे। हमारे परिवारों के बीच कई वर्षों तक रात्रिभोज इत्यादि एवं अन्य अवसरों पर मेलजोल हुआ करता था, जहाँ इन्दु की उपस्थिति एवं उनका गर्मजोशी से भरा व्यक्तित्व ही मुझे याद है.. ४० वर्ष पूर्व मैं कैलिफोर्निया चला गया.. लेकिन उनकी अपनत्व एवं देखभाल की भावना अब भी मुझे याद है।

दीपांजलि दयालः

इन्दु बुआ हमेशा से मेरे लिए अति प्रिय रही हैं। वह कहा करती थीं, "मैंने तुम्हें हमेशा प्यार किया है। जब तुम छोटी बच्ची थी तो इतनी हलकी-फुलकी थी कि मैं तुम्हें अपनी बाहों में सहजता से उठा लेती थी। अब मैं ऐसा नहीं कर सकती। इसलिए, आ मेरी गोद में बैठ जा.." और वह मुझे बड़े प्यार से अपने गले से लगा लेती थीं। अपनी किशोरावस्था के समय से मुझे उनके प्यार के गहरे बंधन का अनुभव हुआ। हम दोनों बातें करते हुए घंटों साथ बिताते थे। मैं उनके साथ छोटे छोटे काम किया करती और कमरे में उनके पसंदीदा किशोर क़ुमार के गाने बजा करते थे। एक इंसान के रूप में वह ज़िन्दगी और ज़ोश से भरी हुई थीं। वह हर उस व्यक्ति के साथ मज़बूती से खड़ी होती थीं, जिसे भी वह ठीक मानती थीं। हम सब बच्चों के लिए एवं उनकी पालतू 'एबनी' के लिए उन्हें विशेष प्यार था। वह हम में से हरेक के विषय में चिंतित रहती थीं। वह कहा करती थीं कि आप सभी बच्चे अपने अपने क्षेत्र में ख़ूब फलेंगे। जब जब मुझे उनकी ज़रूरत महसूस हुई, एक माँ की तरह उन्होंने हर सम्भव प्रयास करके मुझे आत्मविश्वास के साथ प्रोत्साहित किया..

इन्दु दयाल के साथ दीपांजलि एवं उसका छोटा भाई शुभम

कभी कभी वह अचानक कहा करती थीं, 'अब मेरा समय आ गया है..' इस पर मैं अक्सर नाराज़ हो जाया करती थी। वह कहतीं थीं, 'इसके बारे में इतना बुरा महसूस करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि यही सच्चाई है.. हम सभी को एक न एक दिन तो जाना ही होगा।' आपने मुझे बिना शर्तों के प्यार करना सिखाया। मेरा ५ साल का बेटा कहता है, 'इन्दु नानी बहुत प्यारे हैं, वह तो एक परी हैं.. मैं उनसे बहुत प्यार करता हूँ।' बुआ, मैं भी आप से बेहद प्यार करती हूँ और करती रहूँगी। मैं प्रयास करूँगी कि मैंने आप से जो भी सीखा है उसे जीवन में आत्मसात कर सकूँ।

दीपक तलवारः

मेरी यादें मुझे १९६३ की ओर ले गईं। दयाल परिवार, हमारे 'तलवार नर्सिंग होम' के साथ वाले घर में रहने लगा था। मैं इन्दु जी को एक बहुत ही जीवंत एवं सरस व्यक्ति के रूप में याद करता हूँ, विशेषकर से उनकी मुसकुराहट.. मेरे ज़हन में वह जीवन से भरी एक आदर्श किशोर लड़की की छवि थी। हमने पड़ोसियों के रूप में एक साथ बहुत सुन्दर समय बिताया.. मैं सौभाग्यशाली था कि १९७८ में मैं उस परिवार का दामाद बन गया। इन्दु जी के विषय में मेरी धारणा एक ऐसे व्यक्ति की थी जो जीवन को पूर्ण रूप से अनुभव करना चाहती थीं.. उन्होंने जीवन में बहुत सारी चुनौतियों का सामना किया और सराहनीय बात यह है कि उन्होंने उन चुनौतियों को अपने अन्दर ही समेट लिया ताकि उनका मुसकुराता हुआ व्यक्तित्व ही उनके जीवन का प्रमुख हिस्सा बना रहे। पिछले कई वर्षों से वह हमारे घर आया जाया करती थीं। अपनी छोटी बहन व हम सब के लिए उपहारों से हमेशा भरपूर! सभी के लिए प्यार के मीठे शब्द, सब के स्वास्थ्य के विषय में पूछताछ करना.. वह हर किसी के साथ एक होना चाहती थीं। ऐसे बहुत सारे अनुभव हैं जिन्हें मैं महसूस तो कर रहा हूँ, पर शब्दों राही कह नहीं पा रहा.. इन्दु जी, मैं जानता हूँ कि आप जहाँ भी हैं, हमें देख रही हैं व हम से जुड़ी हुई हैं। हम हमेशा जुड़े रहेंगे, जीवन आते-जाते रहेंगे.. परन्तु हमारा यह प्रेम का ख़ूबसूरत बंधन हमेशा हमेशा रहेगा।

प्रेम लताः

मैं बताना चाहूंगी कि हम कैसे मिले, जिससे पता चल पायेगा कि वह क्या थीं! मैं कक्षा में अकेले एक बेंच पर बैठी थी। साथ ही एक दूसरे बेंच पर २ अन्य लड़कियाँ बैठी थीं। हम सभी उस कक्षा में नये नये थे। जैसे ही इन्दु ने कक्षा में प्रवेश किया, दूसरी दोनों लड़कियों ने उन्हें अपने पास बैठने का आग्रह किया। उन्होंने मेरी तरफ देखा और फिर यह जान कर कि मैं अकेली बैठी थी.. उन्होंने कहा, 'मैं इसके साथ बैठ जाती हूँ' और वह मेरे पास आकर बैठ गई और यहाँ से आरम्भ हुई हमारी दोस्ती! यह नाता मेरे साथ ही नहीं था, धीरे धीरे मेरे परिवार के साथ भी बन गया। मेरी माँ कहा करती थी कि इस लड़की को मैं अपने परिवार में लाना चाहती हूँ। मैं उससे चुटकी लेते हुए कहा करती थी, 'मेरे दो भाई हैं.. तुम किसी को भी चुन लो।' वह मुसकुराते हुए इसका ज़वाब दिया करती, 'ठीक है प्रेम, देखेंगे!' शायद उन्हें अपने मन में पता था कि उनकी राहें अलग हैं।

वह अर्पणा में आ गईं और जीवन का एक नया अध्याय आरम्भ हुआ.. मैं विदेश चली गई और उन्हें कम ही मिल पाई.. परन्तु हम जब भी बात करते तो यूँ महसूस होता

जैसे कल की ही बात हो। मुझे इस बात की ख़ुशी है कि वह मेरी मित्र थी और मुझे इस बात का बहुत गर्व भी है। मैं उनकी सुन्दर मुसकान को हमेशा याद करूँगी.. इन्दु, आप अपनी अनन्तकाल की यात्रा की ओर चले गये, लेकिन आप हमेशा मेरे साथ मेरे दिल में रहेंगे।

विजय दयालः

वह एक बहुत प्यारी एवं उदार इंसान थीं। बचपन में जब हम सिविल लाइंज़, दिल्ली में रहा करते थे और उसके बाद मसूरी के बोर्डिंग स्कूल में.. हम सब भाई बहिन एक दूसरे के बहुत क़रीब थे। अब बहुत समय से मधुबन में इकट्ठे रहने लगे.. वह मुझे अक्सर छोटे छोटे कामों के लिए बुला लेती थीं.. अन्य भाई बहिनों की तरह हमारे बीच में भी तर्क-वितर्क हो जाया करते थे.. लेकिन उनमें भी उनका प्रेम छिपा होता था। हमारे कमरे में वह लगभग रोज़ आती थीं और हम इकट्ठे चाय पिया करते थे। मुझे उनके भाई होने पर गर्व महसूस होता है। आज वह भौतिक रूप से हमारे साथ नहीं हैं परन्तु वह मेरे साथ साथ हैं.. हम सभी के साथ.. क्योंकि उनका प्यार हमारे साथ हमेशा रहेगा!

हम साथ साथ हैं.. इन्दु दयाल के साथ उनकी मम्मी और उनके भाई बहिन

संदीप अरोड़ाः

इन्दु दीदी पिछले १० वर्षों से हमारे साथ काम कर रही थीं और हमें उनसे बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला। अर्पणा की सभी गतिविधियों की ओर उनका ध्यान रहता था। चाहे वह अकाउंट्स डिपार्टमेंट में काम कर रही हों या कैन्टीन का काम या अस्पताल की वृद्धि.. वह मेरे साथ हर रोज़ चर्चा करती थीं.. और इन सभी क्षेत्रों में मेरा मार्गदर्शन भी किया करती थीं। वह मेरे लिए हमेशा एक प्रेरणा स्रोत थीं। प्रिय इन्दु दीदी, आप हमारी नज़रों से बेशक ओझल हो गई हों लेकिन हमारे दिलों से दूर कभी नहीं जायेंगी।

अनुपम महताः

सभी ने उनके लिए अपने अपने दिल से बात की है क्योंकि उन्होंने हरेक के दिल को प्यार से छुआ था। उन्हें एक प्रिय मित्र के रूप में पाकर मैं बहुत सौभाग्यशाली थी.. वह अपना आराम देखने से पहले दूसरों के बारे में सोचा करती थी। हैण्डीक्राफ्ट्स की सेल के दौरान हमने कई ख़ूबसूरत पल आपस में बिताये। मेरे पति विनय और मैं हमेशा उन पलों को याद करेंगे। ❖

धैर्य के प्रतीक.. एशी आंटी!

श्रीमती कृष्णा दयाल, जिन्हें हम एशी आंटी के नाम से पुकारते थे, शांतिपूर्वक *१९ दिसम्बर २०२०* को भगवान के आलिंगन में चली गईं..

इस ख़ूबसूरत आत्मा को अर्पित श्रद्धासुमनः *आभा भंडारी*

एशी आंटी को मेरा प्रणाम!

..जिनके व्यक्तित्व की ख़ूबसूरत सुगन्ध चहुँ ओर महसूस होती है!

आज जब मैं प्रिय एशी आंटी का विचार करती हूँ, तो एक ही शब्द है.. 'धैर्य' जो पूरी तरह से उनको वर्णित करता है। पिछले ५० वर्षों से मैं उन्हें जानती थी.. हमेशा शांत, सभी से प्रेम करने वालीं, वह सभी के लिए आशीर्वाद रूप थीं! मेरे विचार में इस प्रकार की स्थिति केवल उसे ही प्राप्त हो सकती है, जिसने जीवन की सच्चाई को भली प्रकार से समझा हो एवं उतनी ही सच्चाई से अपना जीवन जिया हो!

आध्यात्मिकता के प्रति उनकी भक्तिपूर्ण लग्न ही थी जो उन्हें पूज्य माँ के क़रीब ले आई। उनकी आन्तरिक सच्चाई व भक्ति उनके हृदय एवं आँखों में दिखाई देती थी.. वह अपनी युवावस्था से पूज्य माँ को जानती थीं। उन्हें पूज्य माँ को समझने में देर नहीं लगी.. जैसे उन्हें पता हो कि उनके अपने आध्यात्मिक क्षितिज की ओर एक वही तो ले जा सकते हैं।

मुझे अच्छी तरह से याद है, ६० के दशक में ई-२२, डिफेंस कॉलोनी के छोटे से मन्दिर में उनकी आंतरिक खोज परम पूज्य माँ को पूछे गये उनके प्रश्नों में स्पष्ट दिखती थी.. जब जब माँ दिल्ली जाते थे, कोई भी अवसर ऐसा नहीं हुआ होगा, जब एशी आंटी और दयाल अंकल हर सुबह ६.३० बजे वहाँ पर न हों! यह उनका हार्दिक संकल्प ही था जो उन्होंने अपनी सेवा निवृत्ति के बाद मधुबन में समय बिताने का निर्णय लिया.. लेकिन नियति को कुछ और ही मंज़ूर था।

मुझे याद आ रहे हैं ७० के दशक के शुरुआत के दिन.. जब अर्पणा के एक नाटक 'शबरी' के संगीत की रिकॉर्डिंग होनी थी। एशी आंटी और दयाल अंकल ने अपना शाहजहाँ रोड स्थित घर हम सभी के लिए उपलब्ध करा दिया.. हम प्रतिदिन कम से कम २० लोग हुआ करते थे.. हर दिन.. एक महीने से भी अधिक के लिए! संगीतकार, गायक, कलाकार एवं अन्य लोग! वह एक बड़ा फ्लैट नहीं था, लेकिन उस घर के लोगों के दिल बहुत बड़े थे.. जिनकी वजह से वह महलनुमा सा प्रतीत होता था.. सबके लिए जगह थी! और भोजन.. और हर आवश्यकता का एशी आंटी द्वारा बहुत दक्षता के साथ

परम पूज्य माँ के साथ एशी आंटी (दाएं)
और डॉ. श्रीमती कमला भंडारी

प्रबन्धन किया जाता था। उन दिनों की यादें.. उनके आशीर्वाद, सत्संग के प्रति उनकी लग्न, कला की प्रशंसा, मस्ती, मज़ाक़.. ऐसा आकर्षक व्यवहार.. उनकी सुगन्धित यादें आज भी मेरे मन में तरोताज़ा हैं।

फिर वह कठिन समय भी आया जब उनके पति, अंकल दयाल के स्वास्थ्य में गिरावट आ गई.. जब उन्हें स्वयं की कैंसर की बीमारी का पता चला और उन्हें कठिन एवं लम्बे उपचार से गुज़रना पड़ा। इस सबके बीच में भी उनकी अथाह भक्ति ने ही उन्हें बनाये रखा। कभी कोई शिकायत नहीं.. कभी यह नहीं सोचा, 'आपने मुझे यह दुःख क्यों दिया है, भगवान!'

मुझे याद है एक बार मैं उन्हें AIIMS में मिलने गई, मुझे देने के लिए उनके पास ढेरों आशीर्वाद ही आशीर्वाद थे!

फिर ऐसा समय भी आया जब उन्हें अपने जीवन साथी से बिछुड़ना पड़ा.. अंकल दयाल अपनी अगली मंज़िल की ओर चले गये। एशी आंटी का धैर्य हर परिस्थिति में बना ही रहा।

जब जब उन्हें मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, उनका हर पहलू में नियति को स्वीकारने का भाव मुझे गहराई तक छू गया। यह उनकी भक्ति ही थी जिसके बल पर वह जीवन के सभी द्वंद्वों को सहन कर पाती थीं।

हम अपने सभी बड़ों से बहुत कुछ सीखते हैं.. कितने धन्य हैं हम कि हमें असाधारण सुन्दर गुणों को क़रीब से देखने का सौभाग्य मिला है..

गीता में कहा है भगवान की ओर उठाया हुआ एक भी क़दम व्यर्थ नहीं जाता.. वह अगले जन्म में आपको मिल जाता है.. मुझे यक़ीन है, जहाँ कहीं भी भगवान एशी आंटी की पावन आत्मा को ले जायेंगे, वह फिर से सभी में अपना प्यार बाँट रही होंगी लेकिन चुपचाप से.. और फिर से सभी के लिए आशीर्वाद ही आशीर्वाद होंगे।

बिदाई यात्रा की शुभकामनाएं प्रिय एशी आंटी! आप पूर्ण शांति और आनन्द में हों यही हैं मेरे श्रद्धासुमन आपको एवं आपके द्वारा बिखेरी हुई सुन्दरता को! आपका सबसे पसंदीदा गीता हुआ करता था.. 'छिपा लो यूँ दिल में प्यार मेरा.. कि जैसे मन्दिर में लौ दीये की!' एशी आंटी, आपके प्रेमपूर्ण आशीर्वाद सदा हमारे दिलों की गहराईयों में रहेंगे.. जैसे भक्ति आपके हृदय में समाई हुई थी। ❖

परम पूज्य माँ

अर्पणा
समाचार पत्र

अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन,
करनाल, हरियाणा
मार्च २०२१

अर्पणा आश्रम

मन्दिर के सत्संग ऑनलाइन सत्र द्वारा

परम पूज्य माँ ने आध्यात्मिक रूप से हमें एक परिवार की भाँति जुड़े रहने का सरल सा सूत्र दिया.. सभी मिल कर 'साथ में प्रार्थना, साथ में काम, साथ में भोजन' करें! शायद हर परिवार में आपसी सम्बन्ध बनाने का यही सूत्र होता है। अर्पणा परिवार में भी इसे ही पालन करने का प्रयास किया जाता है, कोविड के कठिन दिनों को छोड़ कर.. आजकल सुबह एवं शाम को ऑनलाइन सत्र ही सारे परिवार को जुड़े रहने में सहायक हो रहे हैं.. अर्पणा से जुड़े अन्य सदस्य भी इनमें भाग ले रहे हैं। जन्म से ही हमें अपने मन की दुनिया में ही जीने का अभ्यास रहा है.. ये सत्र नित्य और अनित्य के भेद दर्शाने के बहुत सुन्दर अवसर हैं, जिससे कि हम आनन्द, तृप्ति और शांति के पथ पर चल सकें!

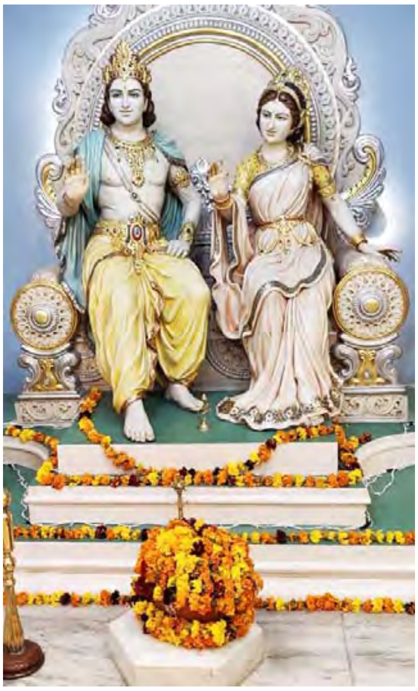

'मृत्यु से अमृत की ओर' - अध्ययन, चिन्तन, मनन

अपने किसी प्रिय के निधन के उपरान्त विभिन्न अनुष्ठानों को आयोजित करने के अर्थ बताते हुए परम पूज्य माँ ने 'मृत्यु से अमृत की ओर' में 'फूल चुनने' का भी महत्व समझाया है। अपने बेहद प्रिय इन्दु दयाल, जिनका निधन ९ जनवरी को हो गया था, के जीवन के सुन्दर गुणों रूपी 'फूलों' को सभी ने मन्दिर में इकट्ठे बैठ कर अपने हृदयों में संजोया। २४ जनवरी को उनके फूल गंगा जी में विसर्जित किये गये।

दिल्ली के कार्यक्रम

उत्सव मनाने का यह ढंग भी..

कोविड के रहते इस वर्ष त्योहारों को मनाने के लिए.. नाटकों की तैयारी, गीत एवं कविताओं के साथ साथ पोस्टर इत्यादि को बनाने के लिए छात्रों ने इन्टरनेट का प्रयोग किया जिससे सभी छात्र उनमें भाग ले सकें। १४ नवम्बर को बाल दिवस, २५ दिसम्बर को क्रिसमस और २६ जनवरी को गणतंत्र दिवस मनाया गया।

'ब्यूटी एंड द बीस्ट' नाटक का प्रदर्शन

नियमित वरिष्ठ कक्षाएं आरम्भ की गईं

सरकार के मार्गदर्शन के अनुरूप जनवरी २०२१ से ९वीं-१२वीं की नियमित कक्षाएं आरम्भ की गईं। वरिष्ठ छात्रों ने आरम्भ की गई कक्षाओं में विशेष रुचि दिखाई एवं नियमित रूप से केन्द्र में आ रहे हैं।

निःशुल्क वस्तुओं का वितरण

आभारी हैं हम इस भरपूर उदारता के लिए..

स्टेशनरीः स्कूल के लिए आवश्यक आपूर्ति

स्वच्छता किटः वर्तमान में चल रही महामारी के लिए स्वच्छता का विशेष महत्व

च्यवनप्राशः इस आयुर्वेदिक टॉनिक के साथ प्रतिरक्षा निर्माण पर बल

कंबलः सर्दियों की भयानक ठंड से बचाव

गर्म जैकेटः सर्दियों के दौरान सभी आयु समूहों के बच्चों द्वारा विशेष रूप से सराहना

अर्पणा अपने शैक्षिक कार्यक्रमों में सहायता करने के लिए अवीवा पीएलसी, यूके, एस्सेल फाउंडेशन, नई दिल्ली, टेक्निप इंडिया, केयरिंग हैंड फॉर चिल्ड्रन, यूएसए एवं अर्पणा कनाडा का अत्यन्त आभारी है।

हरियाणा ग्रामीण सशक्तिकरण

विश्व विकलांगता दिवस

३ दिसम्बर २०२० को अर्पणा के परिसर, गाँव बुढ़्ढाखेड़ा में गतिविधियाँ एवं उत्साह देखते ही बनता था!

संघर्ष महासंघ की वार्षिक आम सभा आयोजित की गई एवं विकलांग बच्चों एवं व्यस्कों द्वारा मेंहदी, रंगोली व पेंटिंग की प्रतियोगिताएं आयोजित करके विश्व विकलांगता दिवस भी मनाया गया। लेखन एवं कागज़ के लिफाफे बनाने की प्रतियोगिता भी हुई जिसमें विकलांग लोगों ने भाग लिया। विकलांग व्यक्तियों द्वारा नाटकों के मंचन ने उत्साह को और भी बढ़ा दिया। गाँव कैलाश के स्वयं सहायता समूहों द्वारा दोपहर का भोजन आयोजित किया गया।

सहायक उपकरणों के लिए शिविर

दीनदयाल उपाध्याय संगठन द्वारा एक स्क्रीनिंग शिविर आयोजित किया गया जहाँ श्रवण यंत्र, गतिशीलता एड्स आदि सहायक उपकरणों के लिए विकलांग लोगों की आवश्यकता अनुसार उन्हें पंजीकृत किया गया।

अलग अलग विकलांगता वाले लोगों के समुदायों को मज़बूत बनाना

१४ दिसम्बर २०२० को १२ विकलांग व्यक्ति पंचायत चुनाव के मतदाता पंजीकरण के प्रशिक्षण सत्र में भाग लेने के लिए ज़िला समाज कल्याण विभाग में गये। 'संघर्ष फेडरेशन' के नेतृत्व में सभी १२ सदस्यों ने आगामी चुनाव के लिए अपने गाँवों में नए मतदाताओं के पंजीकरण को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्धता प्रकट की।

श्री सत्यवान, ज़िला सामाजिक कल्याण अधिकारी, ने चुनाव के विषय में प्रतिनिधिमंडल को परिचय दिया

हरियाणा में ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के अनुदान के लिए टाइड्ज़ फाउंडेशन एवं इन्टरनैशनल डिज़ास्टर एण्ड रिलीफ़ फण्ड (IDRF), **यूएसए, को हमारी गहरी कृतज्ञता!**

अर्पणा अस्पताल

कोविड-१९ टीकाकरण

२२ जनवरी २०२१ को, अर्पणा अस्पताल के १०६ कर्मचारियों को कोविड-१९ वैक्सीन का पहला टीका दिया गया एवं १९ फरवरी को ९५ स्टाफ़ सदस्यों को दूसरा टीका दिया गया।

मार्च के पहले सप्ताह में अर्पणा परिसर में अन्य ४५ वरिष्ठ व्यक्तियों का प्रथम टीकाकरण किया गया।

बृज भूषण

बृज भूषण, एक मज़दूर अपनी पत्नी एवं ३ बच्चों के साथ घरौंडा में रहता है। १०-१२ दिनों तक ठंड लगने एवं पेट दर्द झेलने के बाद वह स्थानीय अस्पताल में गया जहाँ उन्होंने उसे अर्पणा अस्पताल में जाने को कहा। वह गंभीर दर्द में था जब उसे यहाँ भर्ती कराया गया एवं उसका अल्ट्रासाउंड परीक्षण किया गया। उसके रोग के निदान के लिए चिकित्सक ने आवश्यकता अनुसार आधुनिक उपकरणों द्वारा उसे तत्काल उपचार दिया। ६ दिन के बाद उसकी छुट्टी कर दी गई। उसके परिवार के लोगों ने डॉक्टर एवं अस्पताल के कर्मचारियों द्वारा उसकी उत्कृष्ट देखभाल के लिए गहन आभार प्रकट किया।

ग़रीब मरीज़ों की चिकित्सा देखभाल को प्रायोजित करने के लिए 'बैजनाथ भंडारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट' का गहरा आभार!

Your compassionate support sustains Arpana's Services

Arpana Trust and Arpana Research & Charities Trust are both approved under Section 80G of the Income Tax Act, 1961, giving 50% tax relief for donors in India.
FCRA Registration No. for Arpana Trust is 172310001
FCRA Registration No. for Arpana Research & Charities Trust is 172310002

Send your contribution for dissemination of humane values & medical and community welfare services in Delhi to:

Arpana Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132037

Send your contributions for health & development services in Haryana & Himachal to:

Arpana Research & Charities Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132037

Send contributions in USA to:

Mr. Vinod Prakash, President, IDRF, 5821 Mossrock Drive, North Bethesda, MD 20852
Mr. Jagjit Singh, AID for Indian Development, 84 Stuart Court, Los Altos, CA 94022-2249

Send contributions to Arpana Canada:

c/o Mrs. Sue Bhanot, 7 Scarlett Drive, Brampton, Ontario L6Y 3S9, Canada
Please let us know by email or telephone, whenever you transfer funds to Arpana.

Information & Resources Office: 91-184-2390905 **Executive Director:** 91-9818600644
emails: **at@arpana.org and arct@arpana.org**

Contact person: Mrs. Aruna Dayal, Director Development. Mobile 91-9991687310
Websites: **www.arpana.org** **www.arpanaservices.org**